# भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

# राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

**हाइब्रिड माध्यम**

दिनांकः 25 सितम्बर, 2023

## औषधीय पादपों की खेती, उत्पाद निर्माण एवं मूल्य संवर्धन

भारत देश में ऋषियो ने आज से लगभग 7000 वर्ष पूर्व ही पौधों के औषधीय गुणों को पहचान कर चिकित्सीय क्षेत्र में उनका प्रयोग शुरू कर दिया था। चरक संहिता में 1100 एवं सुश्रुत संहिता में 1270 पादपों के औषधीय गुणों का उल्लेख किया गया है। औषधीय पौधों के उपयोग के बारे में उपलब्ध ज्ञान कई वर्षों के वैज्ञानिक शोध का परिणाम है। आधुनिक फार्मेकोथैरेपी प्राचीन सभ्यताओं द्वारा ज्ञात और सताब्दियों से उपयोग की जाने वाली औषधीय पौधों की खेती तथा उत्पाद के मूल्य संवर्धन हेतु निरन्तर शोधरत है। वर्तमान संगोष्ठी शोधकर्ताओं, कृषकों तथा पौध उत्पादकों हेतु नवीन दिशा प्राप्त करने हेतु सहायक सिद्ध हो सकती है।

### विषय

- औषधीय पौधों की खेती, संरक्षण, आर्थिक लाभ एवं सतत् प्रबन्धन
- गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री हेतु पौधशाला प्रबन्धन
- औषधीय पौधों का रोपण, प्रबन्धन, एकत्रीकरण तथा भण्डारण
- उत्पाद संवर्धन हेतु प्राथमिक प्रसंस्करण विधियां तथा नवीन आयाम
- कृषिवानिकी में औषधीय पौधों का महत्व
- औषधीय पौधों का विपणन : सम्भावनाएं तथा अवरोध
- औषधीय पौधों की खेती का प्रचार–प्रसार तथा प्रशिक्षण


**संयोजक**

**डॉ. अनीता तोमर**
**वरिष्ठ वैज्ञानिक**


लगभग 200–250 शब्दों में हिन्दी भाषा में सारांश (Abstract) anitatomar@gmail.com या anubhasri_csfer@icfre.org पर ई–मेल के माध्यम से भेजा जा सकता है। संगोष्ठी हाइब्रिड माध्यम से संचालित की जायेगी। चयनित प्रस्तुतकर्ता ऑनलाइन माध्यम से जुड़ने हेतु वेब लिंकः meet.google.com/qwm-tqsx-fgr का प्रयोग कर सकते हैं।


**आयोजन सचिव**

**डॉ. अनुभा श्रीवास्तव**
**वरिष्ठ वैज्ञानिक**


**सारांश प्रस्तुतीकरण की अन्तिम तिथिः 20.09.2023**

**सारांश स्वीकृति की सूचना तिथिः 23.09.2023**